जो दुनिया में प्यार न होता।

जो दुनिया में प्यार न होता।

तो फिर शिष्टाचार न होता।।

खुली धूप - छाया भी होती,

स्याह रूह काया भी होती।

सुत होते जाया भी होती,

माँ होती माया भी होती।।

भूख - प्यास बीमारी होती,

जीदारी लाचारी होती।

चीख भरी डिडकारी होती,

बेशक दुनिया दारी होती।।

Scanned with OKEN Scanner

लेकिन नाज न नखरे होते,

सुख के सुमन न बिखरे होते।

आकर्षक शृंगार न होता,

आह्लादित संसार न होता।।

जो दुनिया में प्यार न होता।।

मात्र पाशविक वृत्ति पनपती,

ताकतवर की शक्ति उमगती।

मिलती मृत्यु न मुक्ति टमकती,

बस तन पर जंजीर खनकती।।

रोज अतिथि विपदाएँ होतीं,

हया हीन पीड़ाएँ होतीं।

दया रहित करुणाएँ होतीं,

अन्धी काम - कलाएँ होतीं।।

Scanned with OKEN Scanner

पर लम्बे सम्बन्ध न होते,

जीवन के अनुबन्ध न होते।

प्रेम सना व्यवहार न होता,

अनुशासन का भार न होता।।

जो दुनिया में प्यार न होता।।

मोह सहित ममता हर जाती,

जीने की क्षमता क्षर जाती।

नैतिक मानवता मर जाती,

मति को मादकता चर जाती।।

सुन्दरता बोझिल हो जाती,

रंग रहित महफ़िल हो जाती।

हर आशा धूमिल हो जाती,

मुश्किलसे मंजिल मिलपाती।।

Scanned with OKEN Scanner

कोई कहीं कलंक न होते,

भाग्य भवन में अंक न होते।

बँधा हुआ परिवार न होता,

जीवन का आधार न होता।।

जो दुनिया में प्यार न होता।।

गिरेन्द्रसिंह भदौरिया "प्राण"

Scanned with OKEN Scanner

तूणक छन्द में

प्रयाण गीत

देश में विनीत सभ्यता सदा बनी रहे।

सादगी समेत भव्यता सदा बनी रहे।।

कामना करो कि नव्यता सदा बनी रहे।

स्वर्ग सी अनिन्द्य दिव्यता सदा बनी रहे।।

हाँ इसीलिए उठो विकास के लिए चलो।

आपसी बनी रहे मिठास के लिए चलो।।

द्वार - द्वार हो उठे उजास के लिए चलो।

एक बार ही सही प्रयास के लिए चलो।।

जो न आ सकें उन्हें पुकारते चले चलो।

जो दबे हुए दिखें निखारते चले चलो।।

जो गिरे हुए मिलें उबारते चले चलो।

Scanned with OKEN Scanner

हीन भाव जो रखें दुलारते चले चलो।।

काम-क्रोध लोभ द्वेष-दम्भ को पछाड़ दो।

रूढ़िवाद की जड़ें समाज से उखाड़ दो।।

वक्त आ गया कि दुष्ट मित्र को लताड़ दो।

शत्रु शक्ति को विवेक से यहीं उजाड़ दो।।

सिंह हो सियार या कि सामने बिलार हो।

एक दो हजार पार भीड़ बेशुमार हो।।

धार हो कछार खार थार या पठार हो।

हो खड़ा चढ़ाव या सपाट सा उतार हो।।

भ्रष्ट हो चुके उन्हें सुधारते चले चलो।

बुद्धिमान बन सको विचारते चले चलो।।

मित्र बन्धु से सदैव हारते चले चलो।

किन्तु शत्रु-शक्ति के गले उतारते चलो।।

आप हो जवान वीर साहसी अदम्य हो।

Scanned with OKEN Scanner

धीर - वीर कर्मशील पारखी अगम्य हो।।

ध्यान ये रहे कि भूल-चूक नित्य क्षम्य हो।

हो अनाथ भी सनाथ साथ सौम्य रम्य हो।।

धर्म से विकास का सटीक तारतम्य हो।

वीथिका सुगम्य और वाटिका सुरम्य हो।।

वृद्धि यों करो कि बाल-वृद्ध ज्ञानगम्य हो।

हो हरेक भारतीय देव सा प्रणम्य हो।।

लो मशाल हाथ में विचारते चले चलो।

स्वाभिमान से धरा बुहारते चले चलो।।

भाव राष्ट्र - भक्ति के उभारते चले चलो।

देश की दशा - दिशा सुधारते चले चलो।।

कौन है अबोध और क्या कहाँ निदान है।

कौन है प्रबुद्ध शुद्ध कौन ज्ञानवान है।।

कौन है कलानिधान कौन नौजवान है।

Scanned with OKEN Scanner

कौन जो मयंक के कलंक सा निशान है।।

आस-पास घूम-घाम ठीक-ठाक जान लो।

जानकारियों भरी क़िताब की कमान लो।।

कौन देश-भक्त कौन काम का सुजान लो।

कौन देश - द्रोह में लगा हुआ निशान लो।।

भाव पूर्ण आरती उतारते चले चलो।

राग क्या विराग को सँवारते चले चलो।।

प्रेम के प्रताप को पसारते चले चलो।

कामना निजी हजार मारते चले चलो।।

निर्मला नदी हरेक झील हो तड़ाग हो।

बाग हो हरा - भरा प्रसून हो पराग हो।।

शान्त सूर्य से सजा विहान हो विहाग हो।

शिष्टता भरा हुआ नवीन गान राग हो।।

Scanned with OKEN Scanner

मातृभूमि के प्रभाव के लिए चले चलो।

हो न बाहरी दबाव के लिए चले चलो।।

हो नहीं कहीं अभाव के लिए चले चलो।

देवता! किसी सुझाव के लिए चले चलो।।

जागते रहो सदा यही उचारते चले चलो।

भ्रष्ट राजनीति को नकारते चले चलो।।

शिष्टता पसार पाँव धारते चले चलो।

डूबते जहाज को उछारते चले चलो।।

चले चलो चले चलो चले चलो चले चलो।

चले चलो चले चलो चले चलो चले चलो।।

गिरेन्द्रसिंह भदौरिया "प्राण"

Scanned with OKEN Scanner